दिनांक 17 जून, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर एवं सोलीडरीडेड, भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "सोयाबीन की जलवायु सहिष्णु उत्पादन तकनिकी एवं पद्धतियाँ" पर कृषक एवं मैदानी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

सोलीडरीडेड, भोपाल एवं भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इन्दौर द्वारा संयुक्त रूप से "सोयाबीन की जलवायु सहिष्णु उत्पादन तकनिकी एवं पद्धतियाँ" विषय पर ज़ूम प्लेटफार्म पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं कर्नाटक के लगभग 250 कृषकों तथा फील्ड स्टाफ ने भाग लिया. कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रशिक्षण संयोजक डॉ. बी.यू. दुपारे ने सभी का स्वागत करते हुए सोयाबीन कि उन्नत उत्पादन तकनिकी के प्रचार-प्रसार हेतु अच्छे चर्चा-सत्र में कृषकों के सकारात्मक सहयोग एवं तकनिकी के अंगीकरण की आशा व्यक्त की.

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रारंभ में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इन्दौर की कार्यवाह निदेशक, डॉ. नीता खांडेकर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहाँ कि जलवायु परिवर्तन के कारण कीड़े, बीमारियाँ तथा वर्षा के असामान्य वितरण के कारण खरीफ के मौसम में बोई जाने वाली सोयाबीन कि फसल की उत्पादकता में विगत वर्षो में कमी आई हैं. आत्मनिर्भर भारत के लिए तिलहनी फसलो की उत्पादकता में वृद्धि लाना अत्यंत आवश्यक हैं. इसलिए भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इन्दौर द्वारा सोयाबीन फसल से जुड़े सभी भागीदारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा हैं. उन्होंने यह भी कहाँ कि कृषकों को पुराणी प्रचलित किस्में जैसे जे.एस. 95-60 के स्थान पर अन्य नई रोगरोधी किस्मे जैसे जे.एस. 20-69, जे.एस. 20-98, एन.आर.सी. 127 को बोवनी हेतु प्राथमिकता दी जानी चाहिए. इस अवसर पर उन्होंने अगले वर्ष 2022 में मध्य क्षेत्र के लिए सोयाबीन की 3 नवीन किस्में (एन.आर.सी. 130, एन.आर.सी. 138, एन.आर.सी. 142 आदि) के प्रवेश की भी जानकारी दी.

प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर सोलीडरीडेड, भोपाल के महाप्रबंधक डॉ. सुरेश मोटवानी ने बताया कि उनके संस्थान के मैदानी कार्यकर्ताओं कि टीम सोयाबीन फसल कि उत्पादकता बढ़ाने के लिए 60,000 कृषकों के साथ लगातार संपर्क बनाकर उन्नत तकनिकी के साथ-साथ भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा अनुशंसित बी.बी.एफ व रिज फरो पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं.

इस अवसर पर आयोजित प्रमुख रूप से कृषकोपयोगी 5 तकनिकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमे भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मार्गदर्शन एवं उपयुक्त जानकारी प्रदान की. इसमें डॉ मृणाल कुचलान ने "सोयाबीन कि उन्नत प्रजातीय, बीज उत्पादन तकनीक एवं गुणवत्ता परीक्षण", डॉ आर.के .वर्मा द्वारा "सोयाबीन में में खरपतवार प्रबंधन" डॉ .एस.डी .बिल्लोरे द्वारा "सोयाबीन फसल के उत्पादन हेतु अनुशंसित सस्य क्रियाये एवं नवीनतम पद्धतियाँ' डॉ .लोकेश मीणा द्वारा "सोयाबीन के प्रमुख कीट, पहचान एवं नियंत्रण", तथा डॉ डॉ .लक्ष्मण सिंह राजपूत ने "सोयाबीन का बीज उपचार, लक्षण और प्रमुख बीमारियोंविषय पर तकनिकी जानकारी दी .

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के तकनिकी सत्र के बाद कृषक-वैज्ञानिक परिचर्चा सत्र का भी आयोजन हुआ जिसमे प्रतिभागी कृषकों ने अपनी शंकाओं का निराकरण कर उपयुक्त जानकारी प्राप्त की. इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एवं संयोजन भारतीय सोयाबीन अन्सुंधन संस्थान के डॉ. बी.यू. दुपारे, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) द्वारा किया तथा कार्यक्रम की समाप्ति में डॉ. सविता कोल्हे द्वारा सभी संबंधितों को धन्यवाद् ज्ञापित किया गया.